किया है, वहां दूसरी ओर गोफमेन, गारफिंकल जैसे अन्तः क्रियावादी लेखकों के विचारों का भी अपने लेखनों में जहां-तहां प्रयोग किया है।

प्रमुख कृतियाँ:

Conflict Sociology : Towards An Explanatory Science, (1975)

Comte, Auguste

अँगस्त कोम्त

(1798-1857)

'प्रत्यक्षवाद' (पॉज़िटिविज़्म) और 'प्रत्यक्षवादी दर्शन' के जन्मदाता अँगस्त कोम्त को 'समाजशास्त्र का पिता' कहा जाता है। कोम्त ने ही 'सोसिऑलाजी' शब्द की रचना की थी। यद्यपि वे ही पहले व्यक्ति नहीं थे जिन्होंने समाज के बारे में 'समाजशास्त्रीय ढंग' से सोच-विचार किया हो। इनके पूर्व सेन्ट साइमन भी इसी ढंग से समाज के बारे में सोच-विचार कर रहे थे जिनके विचारों का उन पर निश्चित प्रभाव पड़ा है। कोम्त की शिक्षा-दीक्षा प्राकृतिक विज्ञानों में हुई थी, अतः प्राकृतिक विज्ञानों के मॉडल के आधार पर वे मानव समाज के अध्ययन के लिये एक नये विज्ञान की आवश्यकता को महसूस करते थे। उनका विचार था कि समाज का अध्ययन भी उसी प्रकार वैज्ञानिक तौर-तरीकों से किया जाना चाहिये जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा भौतिक जगत् का अध्ययन किया जाता है। अपनी इसी धारणा को मूर्त रूप देने हेतु उन्होंने एक नये सामाजिक विज्ञान की आधार शिला रखी जिसे उन्होंने सर्वप्रथम **सामाजिक भौतिकी'** (सोशॅल फिज़िक्स) का नाम दिया। किन्तु इस नाम के बारे में काफी आलोचना-प्रत्यालोचना और मत-भ्रांति उत्पन्न होने के कारण कुछ समय के बाद स्वयं कोम्त ने इसका नाम बदल कर **'सोसिऑलाजी'** (समाजशास्त्र) कर दिया। कोम्त ने कहा कि प्राकृतिक विज्ञानों की भांति समाजशास्त्र को भी समाज के मूलभूत नियमों की खोज के लिये आनुभविक (एमपिरिकॅल) विधियों का प्रयोग करना चाहिये ताकि मानवीय दशाओं में सुधार की महती भूमिका अदा करने से समाजशास्त्र द्वारा मानवता का बड़ा भला होगा।

कोम्त ने विज्ञानों के एक पदानुक्रम (हाइअॅराकि) का निर्माण किया है जिसकी शुरुआत (आधार के रूप में) उन्होंने गणितशास्त्र से की। गणितशास्त्र के बाद उन्होंने नक्षत्रविज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र और प्राणीशास्त्र से गुज़रते हुए, अन्त में विज्ञानों की इस क्रमिक श्रृंखला में सर्वोपरि समाजशास्त्र को रखा है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न विज्ञान एक नैसर्गिक एवं

Scanned with CamScanner

तार्किक क्रम में विकसित होते हैं। सबसे पहले वह विज्ञान विकसित होता है जो सबसे कम जटिल हो तथा जिसका सरोकार सामान्य घटनाओं से हो और मानवता से अत्यंत दूर हो। सबसे अंत में वह विज्ञान विकसित होता है जो सबसे जटिल हो और मानवता से अत्यंत निकट हो। इसी आधार पर उन्होंने गणितशास्त्र को सर्वप्रथम और समाजशास्त्र को सबसे अंतिम स्थान दिया है और उन्होंने समाजशास्त्र को "सभी विज्ञानों की महारानी" कहा है।

अँगस्त कोम्त का जन्म दक्षिणी फ्रांस में एक बहुत छोटे राजकीय अधिकारी के घर सन् 1798 में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पेरिस के ईकोल पॉलिटेक्निक संस्थान में हुई। उनके अध्ययन के प्रमुख विषय गणित तथा प्राकृतिक विज्ञान थे। स्कूली शिक्षा पूरी करने के पूर्व ही उन्हें विद्यालय प्रशासन के विरुद्ध छात्र-हड़ताल में भाग लेने के लिये निकाल दिया गया था। इसके बाद वे फ्रांस के एक प्रभावशाली राजनीतिक नेता और मार्क्सवादी संस्करण के समाजवादी विचारों के प्रारंभिक प्रखर प्रवक्ता हेनरी द सेन्ट साइमन के पहले सचिव और बाद में सहयोगी बन गये। अँगस्त कोम्त पर **सेन्ट साइमन** के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा है, किन्तु उनके सम्बन्ध बड़ी कटुता के साथ सन् 1824 में तब टूट गये जब कोम्त पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगाया गया जिसे कोम्त ने अस्वीकार कर दिया। कुछ लोगों का इस सम्बन्ध टूटने के पीछे यह विचार रहा है कि सेन्ट साइमन अपने लेखनों में कोम्त के योगदानों को प्रर्याप्त महत्व नहीं दे रहे थे जिसके वे सच्चे हकदार थे। सेन्ट साइमन के साथ सम्बन्ध टूटने के बाद उन्होंने पेरिस में 12 वर्षों तक छोटे-मोटे कार्य किये, किन्तु दुर्भाग्यवश वहां भी वे जम नहीं पाये। कई जगहों से उन्हें निकाल दिया गया। ऐसा कहा जाता है इस काल में उन्होंने मित्र कम और शत्रु अधिक बना लिये।

कोम्त का सामाजिक विज्ञानों को प्रमुख योगदान उनका "मानव प्रगति का नियम" है जो ज्ञान के विकास पर आधारित है। उनकी मान्यता थी कि सभी समाजों का विकास कई चरणों में हुआ है। इस मान्यता को स्पष्ट करने के लिये ही उन्होंने 'प्रगति का नियम' का प्रतिपादन किया जिसे "ज्ञान के विकास का नियम" भी कहा जाता है। इस नियम के अनुसार यह माना जाता है कि हमारे प्रत्येक अग्रणी विचार, हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा, हमारा समस्त मानवीय बौद्धिक विकास तीन विभिन्न सैद्धान्तिक स्तरों के क्रमिक रूप से गुजरता है। ये तीन स्तर (1) **धर्मशास्त्रीय** या काल्पनिक (थिअलॉजिकल), (2) **तत्वमीमांसीय** या अमूर्त (मेटाफ़िजिकल) तथा (3) **प्रत्यक्षात्मक** या वैज्ञानिक (पॉजिटिविस्टिक) हैं। इन्हीं के साथ, मानव जीवन की प्रत्येक मानसिक अवस्था के साथ एक विशिष्ट प्रकार का सामाजिक संगठन और राजनीतिक प्रभुत्व जुड़ा होता है। प्रथम धर्मशास्त्रीय स्तर पर, प्रत्येक घटना की व्याख्या अलौकिक या आधिदैविक आधार पर की जाती है और इसी आधार पर उसे समझने का प्रयास किया जाता है। इस स्तर पर परिवार सामाजिक इकाई का आदि रूप था और राजनीतिक सत्ता पुजारियों, धार्मिक कर्मकाण्ड सम्पादित करवाने वालों और सैनिकों के हाथ में हुआ करती थी। द्वितीय तत्वमीमांसी स्तर पर व्याख्या और बोध के स्रोत अमूर्त शक्तियों को माना जाता था। इस काल में (मध्य युग और पुनर्जागरण काल) सामाजिक इकाई के रूप में राजनीतिक प्रभुत्व चर्च-अधिकारियों और विधि विशेषज्ञों के पास चला गया। तृतीय और सर्वोच्च 'प्रत्यक्षवादी' अर्थात् वैज्ञानिक स्तर पर ब्रह्माण्ड के नियमों का अध्ययन अवलोकन, प्रयोग (परीक्षण) और तुलना के आधार पर किया जाता है। कोम्त ने कहा कि मानवीय ज्ञान

Scanned with CamScanner

और बौद्धिक विकास के वैज्ञानिक चरण की शुरुआत अभी मेरे काल में ही हुई है। कोम्त के अनुसार, प्राकृतिक विज्ञानों की भांति समाजशास्त्र भी आने वाले दिनों में विज्ञान की विधियों (अवलोकन, प्रयोग एवं तुलना आदि) का प्रयोग प्रगति और सामाजिक व्यवस्था के नियमों की व्याख्या और समझने के लिये कर सकेगा। कोम्त का यह त्री स्तरीय प्रगति का नियम समाज के उद्विकासवादी दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

मानव प्रगति के नियम से जुड़ी एक अन्य महत्त्वपूर्ण धारणा को भी स्पष्ट करने का श्रेय कोम्त को दिया जाता है। **कोम्त के अनुसार, समाज 'सावयव' (ऑरगॅनिज्म) का एक रूप है।** समाज और सावयव दोनों में ही संरचना और प्रकार्य की समानता देखी जा सकती है। पेड़-पौधों और पशुओं की भांति समाज की भी एक संरचना होती है जिसकी रचना कई अन्तर्संबंधित भागों से मिलकर बनती है। इस संरचना का उद्भव सरल से धीरे-धीरे अधिक जटिल रूपों में होता जाता है। जैविक प्रतिरूप (मॉडल) को एक आधार के रूप में प्रयोग करते हुए कोम्त ने कहा कि श्रम-विभाजन के माध्यम से समाज अधिकाधिक जटिल, विभेदीकृत और विशेषीकृत होता जाता है। धर्म और भाषा सहित श्रम-विभाजन ने सामाजिक एकता का निर्माण किया है, किन्तु साथ ही इनके द्वारा वर्गों में तथा निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में नया सामाजिक विभाजन भी उत्पन्न हुआ है।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु क्या हो, इसके सम्बंध में कोम्त ने समाजशास्त्र के अध्ययन के लिये कई विषयों का सुझाव दिया है; जैसे आर्थिक जीवन, शासन सम्बन्धी व्यक्तिगतता के स्वरूप, पारिवारिक संरचना, श्रम, भाषा और धर्म आदि। उन्होंने इन विषयों के अध्ययन के लिये यद्यपि समाजशास्त्र का किन्हीं उपक्षेत्रों में वर्गीकरण तो नहीं किया है, फिर भी अध्ययन की सहुलियत की दृष्टि से उन्होंने **समाजशास्त्र के सभी विषयों को दो प्रमुख भागों में बांटा है,** यथा 'सामाजिक स्थैतिकी' (सोशॅल स्टैटिक्स) और 'सामाजिक गतिकी' (सोशॅल डाइनैमिक्स)। सामाजिक स्थैतिकी समाज की संरचना (स्ट्रक्चर) को प्रकट करती है। कोम्त के शब्दों में, यह (सामाजिक स्थैतिकी) समाज के विभिन्न भागों की परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया की खोज से सम्बन्धित है। इसमें सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की खोज की जाती है। इसके विपरीत, 'सामाजिक गतिकी' में समाज रूपी जीव के परिवर्तन की प्रक्रियाओं और स्वरूपों के अध्ययन पर केन्द्रित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, इसके अन्तर्गत समाज का विकास, परिवर्तन की प्रक्रिया और परिवर्तन के निर्धारक तत्वों की खोजबीन की जाती है। कोम्त का विचार था कि समाजशास्त्र का प्रयोग एक साधन के रूप में अधिक न्याय संगत और तार्किक सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिये किया जा सकता है।

कोम्त के लेखनों से एक बात अभी-अभी उजागर हुई है कि उनकी रुचि गहन और अनसुलझी मनोवैज्ञानिक समस्याओं को समझने में भी थी। उनके बाद के लेखनों से मनोभावों और उद्वेगों के अध्ययन में उनकी इस रुचि का पता चला है। समाजशास्त्र में कोम्त के अधिकांश विचारों का अब कोई प्रभाव शेष नहीं है। वे अब इतिहास की वस्तु बन गये हैं, किन्तु वैज्ञानिक अवलोकन एवं परीक्षण, तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य और ऐतिहासिक समाजशास्त्र सम्बन्धी उनके विचार आज भी समाजशास्त्र में महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक माने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

अगस्त कॉम्ट (1798-1957)

- समाजशास्त्र के जनक
- 1038 में इन्होंने "समाज शास्त्र" का प्रतिपादन इसके पूर्व समाजशास्त्र को सेंट साइमन के साथ मिलकर इन्होंने सामाजिक भौतिकी (Social phyices)
- ये प्रत्यक्षवादी हैं, अर्थात् इनकी मान्यता है कि सामजिक सम्बन्धों भी भौतिकीशास्त्र के नियमों के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है।
- कहीं कहीं ये उद्‌विकासवादी भी है।
- इन्होंने मानव समाज के उद्‌विकास के तीन चरण बताए जिसे ज्ञान के तीन स्तरों का नियम भी कहते हैं। (Law of 3 stages).
  - (क) धार्मिक (Theological)
  - (ख) तात्विक (Metaphysical)
  - (ग) प्रत्यक्ष/वैज्ञानकि (Positive or Scientific)
- धार्मिक-धर्म पर आधारित समाज, ज्ञान, विश्वास, नियम बारिश, धूप, छाया प्रत्येक घटना के पीछे दैवी शक्ति।
- तात्विक-तर्क पर आधारित-आत्मा, परमात्मा, ज्ञान, मोक्ष, निर्वाण।
- वैज्ञानिक-कार्य-कारण संबंध पर आधारित समाज
- अगस्त कॉम्ट के अनुसार : समाज शास्त्र सामाजिक स्थितिकी (Static): इसमें सर्वसम्मति होती है। एवं सामाजिक गतिकी (Dynamics): में परिवर्तन एवं प्रगति होती है। का अध्ययन है।
- इन्होंने विज्ञानों का स्तरीकरण किया।
  - (i) Math (गणित)
  - (ii) Astronomy (खगोलशास्त्र)
  - (iii) Physics (भौतिकी)
  - (iv) Chemistry (रसायन)
  - (v) Biology (जीव विज्ञान)
  - (vi) Sociology (समाज शास्त्र)
- इन्होंने समाजशास्त्र को "Mother of all sciences" कहा। इन्होंने समाजशास्त्र की निम्नलिखित अध्ययन पद्धतियां बतायी।
  - (i) Observation (अवलोकन)
  - (ii) Experimentation (प्रयोगात्मक)
  - (iii) Comparison (तुलना)
  - (iv) Historical (ऐतिहासिक)

पुस्तकें:

- Positive Philosophy
- System of Positive Polity
- Religion of Humanity

Scanned with CamScanner